CBSE Class 12 हिंदी कोर

Sample Paper 05 (2019-20)

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न पत्र में तीन खंड हैं - क, ख, ग।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- दो अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।
- चार अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।
- पाँच अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (12)**

   बड़ी चीज़े बड़े संकटो में विकास पाती हैं, बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्जा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होने वनवास के जोखिम को पार किया था। **विंस्टन चर्चिल** ने कहा है कि जिंदगी की सबसे बड़ी सिफत हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते है। ज़िदगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हो, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुःख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि मे बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है। और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं। वे ज़िदगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िदगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनंद नहीं हैं? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो, तो फिर असली मजा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है। ऐसी जिंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

i. गद्यांश में अकबर का उदाहरण क्यों दिया गया है? (1)
ii. पांडवों की विजय का क्या कारण था? (2)
iii. आशय स्पष्ट कीजिए- "जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है।" (2)
iv. साहस की जिंदगी को सबसे बड़ी ज़िदगी क्यों कहा गया। है? (2)
v. दुनिया की असली ताकत किसे कहा गया है और क्यों? (2)
vi. ज़िदगी की कौन-सी सूरत आपको अच्छी लगती है और क्यों? (2)
vii. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। (1)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1x4=4)**

यह किसी ने नहीं बताया है
कि बाढ़ और वर्षा की दया पर टिकी
छोटी जोत की खेती से कैसे गुज़ारा होता था पुरखों का
क्या स्त्रियों और बेटियों को मिल पाता था भर-पेट खाना?
बचपन में बीमार रहने वाले मेरे पिता
बहुत पढ़-लिख भी नहीं पाए थे
वे तो जनम से ही चुप्पा थे
हर समय अपने सीने में
नफ़रत और प्रतिहिंसा की आग धधकाए रहते थे
और जो कभी भुभुका उठती थी
तो पूरा घर झुलस जाता था
उनकी पीड़ा थी कोशी की तरह प्रचंड वेगवती
जिसे भाषा में बाँधने की कभी कोशिश नहीं की उन्होंने।

i. खेती को बाढ़ और वर्षा पर टिकी क्यों कहा गया?
ii. कविता घर की महिलाओं और बेटियों को भर-पेट खाना मिलने न मिलने का क्या संकेत करती है?
iii. आपके विचार से पिता के मन में घृणा और प्रतिहिंसा होने का क्या कारण हो सकता है?
iv. **भाव स्पष्ट कीजिए :**
'जो कभी भुभुका उठती थी

तो पूरा घर झुलस जाता था।'

Section B

3. **तनाव : आधुनिक जीवन-शैली की देन** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

कंप्यूटर: आज की ज़रूरत विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

वनों का महत्त्व विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

4. समाज में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए और समाधान का एक सुझाव भी दीजिए।

OR

दूरदर्शन पर किशोरों के लिए उपयुक्त कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में उपलब्ध नहीं हैं। अंग्रेज़ी के डब किए हुए कार्यक्रम भारतीय सामजिक परिवेश के अनुकूल नहीं होते। इस समस्या पर ध्यान आकृष्ट करते हुए निदेशक, समाचार भारती को पत्र लिखिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

   a. स्तंभ लेखन का तात्पर्य समझाए।

   b. समाचार लेखन के संदर्भ में ककार का क्या आशय है?

   c. फीचर की दो विशेषताएँ बताइए।

   d. वॉचडॉग पत्रकारिता का आशय बताइए।

   e. संपादन के दो सिद्धांत बताइए।

6. गाँवों में फैलता फैशन विषय पर एक आलेख लिखिए।

OR

जंक फूड की समस्या पर एक फीचर लिखिए।

OR

टी वी समाचार के लिए क्या आवश्यक है? इसमें किन विशेष विषयों पर विशेष वुलेटिन तैयार किए जाते हैं?

Section C

7. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)**

दिन जल्दी-जल्दी ढलता हैं!
हो जाए न पथ मर रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पथ भी जल्दी-जल्दी चलता हैं!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे-
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता हैं!

i. काव्यांश की भाषागत दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
ii. भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए:
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे।
iii. 'पथ', 'मंजिल' और 'रात' शब्द किसके प्रतीक हैं?

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2x3=6)

प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर।
आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस।।
हरषि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना।।
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई।।
हृदयँ लाइ प्रभु भेटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता।।
कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा।।

i. हनुमान के आगमन को करुण रस के बीच वीर रस की उत्पत्ति क्यों कहा गया है?
ii. 'अति कृतज्ञ' कौन हुआ और क्यों?
iii. इन पंक्तियों में वर्णित भाइयों के प्रेम-भाव की आज के जीवन में प्रासंगिकता पर टिप्पणी कीजिए।

8. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x2=4)**

खरगोश की आँखों जैसा लाल सबेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नई चमकीली साईकिल तेज़ चलाते हुए
घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से।

i. काव्यांश में आए बिंबों का उल्लेख कीजिए।
ii. प्रकृति में आए परिवर्तनों की अभिव्यक्ति कैसे हुई है?

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×2=4)

नभ में पाँती-बँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जाती वे मेरी आँखें।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।

i. 'माया' शब्द के प्रयोग-सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।
ii. काव्यांश में प्रयुक्त अलंकारों का उल्लेख कीजिए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:
   a. **भाषा को सहूलियत** से बरतने से क्या अभिप्राय है? (बात सीधी थी पर)
   b. उषा कविता में कवि ने किस जादू के टूटने का वर्णन किया है?
   c. **रुबाइयाँ** पाठ के आधार पर घर-आँगन में दीवाली और राखी के दृश्य-बिंब को अपने शब्दों में समझाइए।
10. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x3=6)**

फिर जीजी बोलीं, "देख तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ। अपने पास से लेकर ज़मीन में क्यारियाँ बना कर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, क़स्बा, गाँव पर पानीवाले फ़सल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषिमुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हे चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भईया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा। यही तो गांधी जी महाराज कहते हैं।

i. बुवाई के लिए किसान किस प्रकार से श्रम करते हैं?
ii. त्याग की महत्ता को किसने बताया था? समाज के लिए यह क्यों ज़रूरी है?
iii. "यथा प्रजा तथा राजा' से जीजी क्या कहना चाहती थीं?

OR

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2×3=6)

शिरीष का फूल संस्कृत-साहित्य में बहुत कोमल माना गया है। मेरा अनुमान है कि कालिदास ने यह बात शुरू-शुरू में प्रचार की होगी। उनका इस पुष्प पर कुछ पक्षपात था (मेरा भी है)। कह गए है, शिरीष पुष्प केवल भौंरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिल्कुल नहीं–"पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीष पुष्पं न पुनः पतत्रिणाम्।" अब मैं इतने बड़े कवि की बात का विरोध कैसे करूँ? सिर्फ विरोध करने की हिम्मत न होती तो भी कुछ कम बुरा नहीं था, यहाँ तो इच्छा भी नहीं है।

खैर, मै दूसरी बात कह रहा था। शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब कुछ कोमल है। यह भूल है। इसके फल इतने मज़बूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नई पौध के लोग उन्हे धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं।

i. प्रस्तुत गद्यांश के पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए।
ii. शिरीष के पुष्प की कोमलता के बारे में कालिदास का क्या कहना था?
iii. लेखक कालिदास की बात का विरोध क्यों नहीं कर पा रहा था?

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)
    a. बाज़ार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता वह देखता है सिर्फ़ उसकी क्रय शक्ति को। इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?
    b. पाठ के आरंभ में **नमक** किस बात का प्रतीक है? इस कहानी में **वतन** शब्द का भाव किस प्रकार दोनों तरफ के लोगों को भावुक करता है?
    c. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा ज़बरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें) इसकी स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे?
    d. चार्ली चैप्लिन की फ़िल्मों के बारे में परिचय दीजिए।
12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:
    a. स्कूली दिनों की कौन-सी आदत यशोधर बाबू आज भी नहीं छोड़ पाए थे? यह आदत किन मूल्यों को बढ़ाने में सहायक थी?
    b. किशनदा का बुढ़ापा सुखी क्यों नहीं रहा? **सिल्वर वैडिंग** पाठ के सन्दर्भ में उत्तर दीजिए।
    c. **जूझ** कहानी में चित्रित ग्रामीण जीवन का संक्षिप्त वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
    d. अतीत में दबे पाँव के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए।
    e. सिंधु-सभ्यता में नगर नियोजन से भी कहीं ज़्यादा सौंदर्य-बोध के दर्शन होते हैं। **अतीत में दबे पाँव** पाठ में दिए तथ्यों के आधार पर जानकारी दीजिए।

CBSE Class 12 हिंदी कोर
Sample Paper 05 (2019-20)

Solution
Section A

1. i. गद्यांश में अकबर का उदाहरण इसलिए दिया गया है क्योंकि उसका जन्म विपरीत परिस्थितियों में हुआ, फिर भी उसने तेरह वर्ष की आयु में अपने पिता के शत्रु को परास्त कर दिया था। इसका कारण यह था कि उसमें बाधाओं से लड़ने की असीम शक्ति थी।
   ii. पांडवो की विजय का कारण यह था कि उन्होने लाक्षागृह की कठिन परिस्थितियों को सहन किया तथा वनवास में अनेक मुसीबतें झेली थीं।
   iii. प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि निर्धन लोग सामान्य जीवन जीते है। वे न तो जीत की स्थिति में अधिक प्रसन्न होते हैं, न दुःख की स्थिति में ज्यादा हताश या निराश होते है। वे बँधी-बँधाई लीक (परिपाटी) पर बिना कुछ कहे चुपचाप चलते रहते हैं।और इसके अतिरिक्त वे कुछ करने में सक्षम भी नहीं हैं।
   iv. साहस की जिंदगी को सबसे बड़ी जिंदगी इसलिए कहा गया है क्योंकि साहसी व्यक्ति ही मानवता को नई दिशा दे सकता है। वह अपना तथा देश का भाग्य बदल सकता है। अतः साहस की जिंदगी का सर्वाधिक महत्त्व है।
   v. दुनिया की असली ताकत एक क्रांतिकारी व्यक्ति को कहा गया है क्योंकि क्रांतिकारी व्यक्ति अपने तरीके से ज़िन्दगी जीते हैं। वे दूसरो की नकल नहीं करते, बल्कि अपने लिए स्वयं ही नए पथ (मार्ग) का निर्माण करते है।
   vi. हमें ज़िंदगी की यह सूरत अच्छी लगती है कि हम ऊँचे श्रेष्ठ उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयास करें तथा जगमगाती हुई जीत को प्राप्त करें क्योंकि जीवन मे ऊँचे उद्देश्य में सफलता प्राप्त करना ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
   vii. प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-'साहस की ज़िंदगी'
2. i. खेती को वर्षा और बाढ़ पर टिकी हुई कहा गया है क्योंकि
      - पानी बरसने पर खेती लहराएगी।
      - बाढ़ न आने पर खेती सुरक्षित रहेगी
   ii. घर की महिलाओं द्वारा परिवार एवं अतिथियों के पश्चात् स्वयं भोजन करने की परंपरा।
   iii. पिता के मन में घृणा और प्रतिहिंसा होने का कारण उसकी बीमारी और असमर्थता है।
   iv. प्रस्तुत पंक्ति का भाव है कि पिता के क्रोध से पूरा घर प्रभावित होता था।

Section B

3. **तनाव : आधुनिक जीवन-शैली की देन**

आज मनुष्य विकास के उच्चतम स्तर पर पहुँच चुका है, परंतु वह और अधिक की लालसा कर रहा है। इसकी वजह से वह एक नई बीमारी की गिरफ्त में आ रहा है। वह है- तनाव। तनाव एक मानसिक प्रक्रिया है। यह हमारे दिमाग में हमेशा रहता है। घटनाएँ तनाव का कारण नहीं हैं, बल्कि मनुष्य इसे कैसे समझता या प्रभावित होता है, यह तनाव का कारण है। तनाव

शक्तिशाली चीज है। यह या तो बहुत अच्छा हो सकता है, या नुकसान का कारण हो सकता है। यह बहती नदी के समान है। जब मनुष्य इस पर बाँध बनाता है। तो वह पानी की दिशा को अन्य स्थान की ओर अपनी इच्छा से बदल सकता है, परंतु जब नदी पर बाँध नहीं होता तो वह बहुत विनाश करती है। तनाव भी ऐसा ही है। आज समाज में तनाव से एक बहुत बड़ा तबका ग्रस्त है।

मनुष्य हमेशा किसी-न- किसी उधेड़बुन में रहता है। ऐसा नहीं है कि तनाव पुराने युग में नहीं होता था। तब भी तनाव होता था परंतु बहुत कम होता था। आधुनिक जीवन-शैली से निरर्थक तनाव उत्पन्न हो रहा है, जैसे-बिजली का चला जाना, बच्चे का सही ढंग से होमवर्क न करना, भीड़ के कारण हर समय ट्रेन या बस छूटने का भय, दफ़्तर, स्कूल आदि गंतव्य पर सही समय पर न पहुँचने का भय, मीडिया द्वारा प्रचारित भय। हमारे जीवन जैसे-जैसे संसाधन बढ़ रहे हैं या जिस प्रकार से हमारी जीवन-शैली बदल रही है, वैसे-वैसे हम और अधिक तनाव के चंगुल में फँसते जा रहे हैं।

मनुष्य स्वयं को अमर या सर्वाधिक सुखी करना चाहता है, परंतु वह अपनी क्षमता व साधनों का ध्यान नहीं रखता। मनुष्य थोड़े समय में अधिक काम करना चाहता है। वह हमेशा जीतना चाहता है। अतः आज मानव नकारात्मक प्रवृत्ति से ग्रस्त है। उसे हर कार्य में नुकसान होने का भय रहता है। तनाव रहने से मनुष्य विभिन्न व्याधियों से ग्रस्त हो जाता है। मनुष्य निराशाजनक जीवन जीने लगता है। वह चिड़चिड़ा, गुस्सैल प्रवृत्ति का हो जाता है। हमारे जीवन में तनाव होने की अधिकांश वजह हमारी नकरात्मकता है।

वस्तुत: तनाव हमारे जीवन के लाभ-हानि खाते में उधार की प्रविष्टि है। जब मनुष्य अपनी मुश्किलों को हल नहीं कर पाता तो वह तनावग्रस्त हो जाता है। ये मुश्किलें वास्तविक विचार के न होने के कारण हैं इसलिए मनुष्य को अधिक-से-अधिक अच्छे विचार सोचने चाहिए। मनुष्य को रचनात्मक ढंग से नए तरीके से व धैर्य से खुशी को ढूँढ़ना चाहिए। थोड़े समय में अधिक पाने की इच्छा त्याग देनी चाहिए।

मनुष्य को व्यापार के इस सिद्धांत का पालन करना चाहिए-अच्छे को बेहतर का दुश्मन न बनाइए। मनुष्य को अपनी मनोवृत्ति सकारात्मक बनानी चाहिए। मनुष्य का मस्तिष्क बहुत बड़ी भूमि के समान है यहाँ वह खुशी या तनाव उगा सकता है। दुर्भाग्य से यह मनुष्य का स्वभाव है कि अगर वह खुशी के बीज बोने की कोशिश न करे तो तनाव पैदा होता है। खुशी फसल है और तनाव घासफूस है।

OR

कंप्यूटर : आज की ज़रूरत

कंप्यूटर वास्तव में, विज्ञान द्वारा विकसित एक ऐसा यंत्र है, जो कुछ ही क्षणों में असंख्य गणनाएँ कर सकता है। कंप्यूटर ने मानव जीवन को बहुत सरल बना दिया है। कंप्यूटर द्वारा रेलवे टिकटों की बुकिंग बहुत आसानी से और कम समय में की जा सकती है।

आज किसी भी बीमारी की जाँच करने, स्वास्थ्य का पूरा परीक्षण करने, रक्त-चाप एवं हृदय गति आदि मापने में इसका भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। रक्षा क्षेत्र में प्रयुक्त उपकरणों में कंप्यूटर का बेहतर प्रयोग उन्हें और भी उपयोगी बना रहा है। आज हवाई यात्रा में सुरक्षा का मामला हो या यान उड़ाने की प्रक्रिया, कंप्यूटर के कारण सभी जटिल कार्य सरल एवं सुगम हो गए हैं। संगीत हो या फ़िल्म, कंप्यूटर की मदद से इनकी गुणवत्ता को सुधारने में बहुत मदद मिली है। जहाँ कंप्यूटर से अनेक लाभ हैं, कंप्यूटर से कुछ हानियाँ भी हैं। कंप्यूटर पर आश्रित होकर मनुष्य आलसी प्रवृत्ति का बनता जा रहा है।

कंप्यूटर के कारण बच्चे आजकल घर के बाहर खेलों में रुचि नहीं लेते और इस पर गेम खेलते रहते हैं। इस कारण से उनका शारीरिक और मानसिक विकास ठीक से नहीं हो पाता। फिर भी कंप्यूटर आज के जीवन की आवश्यकता है। अगर हम इसका सही ढंग से प्रयोग करें, तो हम अपने जीवन में और तेजी से प्रगति कर सकते हैं ।

OR

वनों का महत्त्व

वन हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं, किंतु सामान्य व्यक्ति इनके महत्व को समझ नहीं पाते। दैनिक जीवन में वनों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। वृक्षों के अभाव में पर्यावरण शुष्क हो जाता है और प्रकृति का सौंदर्य नष्ट हो जाता है। वन हमारे वातावरण को संतुलित करते हैं, और हमें विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं से बचाते हैं।

वनों से हमें विभिन्न प्रकार की लकड़ियाँ; जैसे- इमारती लकड़ी, जलाने की लकड़ी, दवाई में प्रयोग होने वाली लकड़ी आदि प्राप्त होती हैं।

वृक्षों की लकड़ियाँ व्यापारिक दृष्टि से भी उपयोगी होती हैं। इनमें सागौन, देवदार, चीड़, शीशम, चंदन, आबनूस इत्यादि प्रमुख हैं। वनों से लकड़ी के अतिरिक्त अनेक उपयोगी वस्तुओं की प्राप्ति भी होती है, जिनका अनेक उद्योगों में कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है; जैसे-फर्नीचर उद्योग, औषधि उद्योग इत्यादि। वनों से हमें विभिन्न प्रकार के फल प्राप्त होते हैं, जो हमारा पोषण करते हैं।

वनों से हमें अनेक जड़ी-बूटियाँ प्राप्त होती है। वनों में अनेक पशु-पक्षी होते हैं; जैसे-हिरण, नीलगाय, भालू, शेर, चीता, बारहसिंगा आदि। ये पशु वनों में स्वतंत्र विचरण करते है, भोजन और संरक्षण पाते हैं। वन गाय, भैस, बकरी, भेड़ आदि पालतू पशुओं के लिए विशाल चरागाह प्रदान करते हैं।

भारतीय कृषि वर्षा पर निर्भर रहती है और वर्षा मानसून पर निर्भर है। वन मानसून को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं और वर्षा से वन बढ़ते हैं।

वन वायु को शुद्ध करते है क्योकि वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड को ग्रहण करके ऑक्सीजन छोड़ते है, जिससे पर्यावरण शुद्ध होता है। वनों से वातावरण का तापक्रम, नमी और वायु प्रवाह नियमित होता है, जिससे जलवायु में संतुलन बना रहता है। वनों के कारण वर्षा का जल मंद गति से बहता है, जिससे भूमि कटाव की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। साथ ही, पेड़-पौधों की जड़ें मिट्टी के कणों को सँभाले रहती हैं, जिससे भूमि कटाव नहीं होता। इससे भूमि ऊबड़-खाबड़ नहीं हो पाती और भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहती है। वनों का हमारे जीवन में योगदान स्पष्ट है। वन हमारे जीवन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बहुत उपयोगी हैं इसलिए वनों का संरक्षण और संवर्द्धन बहुत आवश्यक है और इनके नष्ट का खामियाजा हमें भुगतना पड़ेगा। आजकल हम वातावरण और जलवायु में निरंतर परिवर्तन देख रहे हैं, ये सब वनों के नष्ट होने के कारण ही हैं और अगर इस पर जल्द नियंत्रण न किया जाए तो आने वाले समय की स्थिति और भयावह हो जाएगी।

4. 261, गाँधी नगर
   दिल्ली।
   17 अप्रैल, 2019
   सेवा में,

संपादक महोदय,
दैनिक भास्कर,
दिल्ली।

विषय- महिलाओं के प्रति बढ़ रहे अपराधों के संबंध में

महोदय

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से दिल्ली प्रशासन का ध्यान महिलाओं के प्रति बढ़ रहे अपराधों की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। आजकल दिल्ली अपराधों का केद्र बनती जा रही है। यहाँ अब महिलाएँ स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करती। दिन-प्रतिदिन यहाँ अपराधों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। छेड़खानी की घटनाएँ तो आम बात हो गई है।

महिलाओं के प्रति अपराधों के बढ़ने का कारण यह है कि सामाजिक सुरक्षा तथा न्याय व्यवस्था के विषय में अपराधियों को पता होता है कि वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। कत्ल, हत्या, छेड़छाड़ कुछ भी हो, कोई भी गवाही देने को तैयार नहीं होता। लोग कोर्ट-कचहरी से डरते हैं। ऐसे डरपोक समाज का फायदा उठाते हुए कुप्रवृत्ति वाले लोग गलत काम करने से बाज़ नहीं आते हैं। चूँकि न्याय व्यवस्था और पुलिस से उन्हें कोई खतरा नहीं, इसी कारण से वे लोग अपनी हरकतों से बाज नहीं आते हैं।

अतः प्रशासन को ऐसी हरकत करने वालों पर निगरानी रखनी चाहिए और इन सभी पहलुओं पर विचार करते हुए ऐसे अपराधियों के खिलाफ़ सख़्त-से-सख्त कदम उठाने चाहिए। मैं चाहती हूँ कि आप अपने समाचारपत्र के जरिये हमारे समाज को इस विषय पर जागरूक करें ताकि हम इन सामाजिक दरिंदों से अपनी रक्षा कर सकें।

धन्यवाद

भवदीया

ऋतिका

OR

गाँधी नगर, दिल्ली
7 अप्रैल, 2019
सेवा में,
समाचार-भारती
नई दिल्ली।

विषय- किशोरों के लिए भारतीय भाषाओं में उपयुक्त कार्यक्रम उपलब्ध नहीं

महोदय,

मैं एक दर्शक होने के नाते बड़े खेद के साथ लिख रहा हूँ कि आपके द्वारा प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रमों में किशोरों के लिए कोई भी कार्यक्रम ऐसा नहीं है, जो मौलिक रूप से भारतीय भाषाओं में निर्मित किया गया हो। किशोरों के लिए दिखाए जाने वाले कार्यक्रम एक तो बहुत कम दिखाए जाते हैं और जो दिखाए जाते हैं, वे भी भारतीय भाषाओं में न होकर मौलिक रूप से अंग्रेज़ी भाषा में बने होते हैं, जिनका 'डब' किया हुआ संस्करण प्रसारित किया जाता है। अंग्रेज़ी के ‘डब' किए हुए

कार्यक्रम भारतीय सामाजिक परिवेश से जुड़े नहीं होते हैं, इसी कारण वे भारतीय सामाजिक परिवेश के अनुकूल भी नहीं होते। ऐसे कार्यक्रमों को देखने वाले पर कोई गहरा प्रभाव भी नहीं पड़ता है।
जब तक कोई व्यक्ति घटनाओं से स्वयं को नहीं जोड़ेगा, उसके साथ आत्मीयता स्थापित नहीं कर पाएगा, तब तक वह उसे आत्मसात् भी नहीं कर सकता। बाहरी सामाजिक परिवेश से संबंधित होने के कारण इन कार्यक्रमों का युवाओं पर यथेष्ट प्रभाव नहीं पड़ता। मैं ऐसा नहीं कहता कि आप अंग्रेजी से डब किये हुए कार्यक्रम न दिखाएँ, पर इतना ज़रूर कहूँगा कि प्राथमिकता भारतीय भाषाओं को देनी चाहिए । क्योंकि अपनी भाषा का प्रभाव बहुत जल्द और अधिक पड़ता है।
अतः आपसे निवेदन है कि किशोरों के लिए दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों में ऐसे कार्यक्रमों का ही प्रसारण करें जिनका संबंध भारतीय सामाजिक परिवेश से हो। इसके लिए आवश्यक है कि ऐसे कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में ही उपलब्ध कराए जाएँ तथा उन्हें ही प्रसारित किया जाए, जिससे किशोरों पर उनका यथेष्ठ प्रभाव पड़ सके।
धन्यवाद
भवदीय
सुमन

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

   a. कुछ विशिष्ट लेखक अपने मनचाहे विषय को चुनकर एक विशेष शैली में नियमित स्तंभ लिखते हैं। इसे स्तंभ लेखन कहा जाता है। इसमें लेखक के अपने विचार अभिव्यक्त होते हैं।

   b. किसी भी समाचार या रिपोर्ट में ककार का आशय है - क्या, कब, कौन, कहाँ, क्यों और कैसे ।

   c. **फीचर की दो उल्लेखनीय विशेषताएँ निम्न है-**

      i. फीचर का विषय चर्चित एवं जनरुचि पर आधारित होता है।
      ii. फीचर सुगठित, क्रमबद्ध एवं रोचक होना अनिवार्य है। उसमें औत्सुक्य, जिज्ञासा तथा भावनाओं को जागृत करने की क्षमता होनी चाहिए।

   d. कहीं किसी प्रकार की गड़बड़ी को सार्वजनिक करना 'वॉचडॉग पत्रकारिता' कहलाता है। यह सरकारी सूत्र पर आधारित पत्रकारिता है।

   e. **संपादन के दो सिद्धांत निम्नलिखित हैं -**

      1. **निष्पक्षता -** संपादन में निष्पक्षता का तात्पर्य है बिना किसी का पक्ष लिए अपना कार्य करना।
      2. **वस्तुपरकता -** संपादन में वस्तुपरकता का तात्पर्य है कि जो हम संपादित कर रहे हैं, वो विषय से जुड़ा है या नहीं ।

6. **गाँवों में फैलता फैशन**

फैशन आजकल एक आम शब्द बन कर रह गया है, सभी को फैशन में रहना है चाहे वो गाँव से हो अथवा शहर से।किसी भी

समाज में कोई भी नया फैशन सामान्यत: महानगरों से प्रारंभ होता है। उस फैशन का जैसे-जैसे प्रचलन बढ़ता जाता है, लोगों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित होता जाता है,और फिर वह फैलना शुरू हो जाता है छोटे से छोटे इलाके में भी। वास्तव में, फैशन का मूल उद्देश्य है-'सबसे अलग दिखना'। सबसे अलग दिखने की आकांक्षा या इच्छा ही लोगों को नए-नए फैशन अपनाने के लिए बाध्य करती है।

आज का समय दूरसंचार की क्रांति का समय है। जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के कारण एक बात कुछ ही सेकंड में एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँच जाती है। महानगरों में उत्पन्न फैशन भी शीघ्र ही विभिन्न गाँवों तक पहुँच जाता है। उन्हें अपनाने की होड़ शहरी लोगों की तरह ग्रामीण लोगों में भी मच जाती हैं। विज्ञापन के माध्यम से लोगों को यह संदेश जाता है कि आधुनिक फैशन के बिना उन्हें आधुनिक एवं सभ्य नहीं समझा जाएगा। अतः स्वयं को सुंदर, आकर्षक एवं आधुनिक बनाने के लिए गाँव वाले भी शहरी लोगों की तरह फैशन के दीवाने बन जाते हैं।

यही कारण है कि आधुनिक पहनावे एवं तौर-तरीकों के बीच पारंपरिक पहनावे एवं तौर-तरीके गायब होते जा रहे हैं। घाघरा, पगड़ी, धोती जैसी चीजें लुप्त होती जा रही हैं। आज मीडिया की अत्यधिक सक्रियता के कारण गाँव एवं शहर में कोई अंतर नहीं रहता। गाँव भी शहरी संस्कृति को ज़ोर-शोर से अपनाने के लिए व्याकुल है। शहर में विकसित कोई भी फैशन कुछ ही दिनों में ग्रामीण समाज में भी प्रचलित हो जाता है । लेकिन क्या यह बदलाव सार्थक है? इसका उत्तर तो समय ही देगा, लेकिन इतना अवश्य है कि पारंपरिक वेशभूषा को बनाए रखने की ज़िम्मेदारी काफी हद तक गाँवों की है। अतः इसका अवश्य ध्यान रखा जाना चाहिए।

OR

जंक फूड की समस्या

आधुनिक रहन-सहन और दौड़-धूप से भरी जिंदगी ने मनुष्य के जीवन में कई परिवर्तन किए हैं। आज लोगों के पास समय का अभाव है। इस व्यस्त जिंदगी में सब कुछ फास्ट हो गया है और इसी जल्दबाजी ने मनुष्य को भोजन की एक नई शैली के जाल में फँसा दिया है, जिसे फास्ट फूड या जंक फूड कहते हैं। जंक फूड उस प्रकार के खाने को कहते हैं, जो चंद मिनटों में बन कर तैयार हो जाता है, पर ये स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक होता है। जंक फूड़ के प्रति बच्चों के लगाव ने उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को एक चुनौती के रूप में लाकर देश के सामने खड़ा कर दिया है।

देश में चिकित्सक, शिक्षाविद्, अभिभावक सभी चितिंत हैं क्योंकि जंक फूड के सेवन से बच्चे उन बीमारियों के शिकार हो रहे हैं, जो अधिक उम्र के लोगों में हुआ करती थीं। जंक फूड बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास को बुरी तरह से प्रभावित करता है, जिसके कारण उन्हें भविष्य में कई तरह की परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। जंक फूड के अंतर्गत आलू के चिप्स, स्नैक्स, इंस्टैंट नूडल्स, कॉबनेट-पेय पदार्थ, बर्गर, पिज्जा, मोमोज, फ्राइड चिकन आदि खाद्य पदार्थ शामिल किए जा सकते हैं।

लगभग सभी प्रकार के जंक फूड में कैलोरी की मात्रा बहुत अधिक होती है, जिससे अति पोषण की समस्या उत्पन्न हो जाती है। अधिक कैलोरी के साथ-साथ जंक फूड में नमक, ट्रांस फैट, चीनी, परिरक्षक (प्रिजरवेटिव), वनस्पति घी, सोडा, कैफीन आदि भी अधिक मात्रा में होते हैं, जबकि फाइबर बहुत कम होता है।

इन सभी से मोटापे का खतरा अत्यधिक बढ़ जाता है और मधुमेह, हृदय रोग, ब्लड प्रेशर, कब्ज, सिरदर्द, पेटदर्द आदि बीमारियाँ बच्चों को छोटी उम्र में ही घेर लेती हैं। जंक फूड के कारण बच्चों का बुद्धिलब्धि स्तर (आई क्यू) कमजोर होने

लगता है, जिसका परिणाम मानसिक विकलांगता के रूप में भी सामने आ सकता है।
इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जंक फूड का प्रयोग बच्चों के सुनहरे भविष्य में बहुत बड़ी रुकावट बन सकता है। जंक फूड कम से कम अथवा नहीं खाना चाहिए, ये अनेक प्रकार की बीमारियों को आमंत्रित करने का कार्य करता है।

OR

टीवी समाचार तथ्यों पर आधारित होने चाहिए। इनमें स्पष्टता होना अत्यंत आवश्यक है। उसके अभाव में दर्शक भ्रमित हो जायेंगे। टी वी समाचार संक्षिप्त भी होने चाहिए तथा इसमें भाषा का प्रवाह तथा ऑडियो विजुअल में साम्य भी होना चाहिए। टी वी में विशेष विषयों पर केन्द्रित विशेष बुलेटिन भी तैयार किए जाते हैं जैसे क्राइम से जुड़ी खबरों के लिए क्राइम बुलेटिन, खेल की खबरों के लिए स्पोर्ट्स बुलेटिन तथा चुनाव का खबरों को दर्शाने के लिए चुनाव बुलेटिन।

Section C

7. i. इस काव्यांश की भाषा सरल खड़ी बोली, संगीतमयी व प्रवाहमयी है। इसमें दृश्य बिंब का सुंदर प्रयोग और 'जल्दी-जल्दी' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
   ii. इन पंक्तियों में पक्षियों के वात्सल्य भाव को दर्शाया गया है। बच्चे भूख से व्याकुल हैं इसीलिए वे माँ-बाप के आने की प्रतीक्षा करते हुये घोंसलों से झाँकने लगते हैं। वे माँ की ममता के लिए व्यग्र हैं।
   iii. 'पथ', 'मंजिल' और 'रात' क्रमशः 'मानव-जीवन के संघर्ष', 'परमात्मा से मिलने की जगह' तथा 'मृत्यु' के प्रतीक हैं अर्थात जीवन रूपी पथ पर चलते-चलते कहीं मृत्यु न हो जाये और परमात्मा से मिलन न हो पाये।

OR

i. हनुमान के आगमन को करुण रस के बीच वीर रस की उत्पत्ति इसलिए कहा गया है क्योंकि लक्ष्मण के घायल होने पर प्रभु राम और उनकी सेना शोकग्रस्त होकर करुणा के सागर में डूब रही थी और उसी समय संजीवनी बूटी के साथ हनुमान के आते ही सर्वत्र हर्ष और वीरता का भाव प्रस्फुटित हो जाता है।
ii. 'अति कृतज्ञ' प्रभु राम हुए क्योंकि हनुमान ने संजीवनी बूटी लाकर राम और उनकी सेना को लक्ष्मण के घायल होने के शोक से उबार दिया।
iii. उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से तुलसीदास जी ने भाइयों के प्रेम-भाव का मार्मिक चित्रण किया है। आज के इस भौतिकवादी और स्वार्थी संसार में जहाँ पारिवारिक जीवन मूल्य समाप्त होते जा रहे हैं तथा संयुक्त परिवारों का प्रचलन समाप्त होता जा रहा है वहां राम और लक्ष्मण का यह भ्रातृ प्रेम आज भी प्रासंगिक है।

8. i. उपर्युक्त पदयांश के आधार पर कवि ने दृश्य बिम्ब का प्रयोग किया है जैसे -
   - खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
   - शरद ऋतु के प्रारंभ का बच्चे के रूप में चित्रण करते हुये उसका अपनी नई साइकिल तेजी से चलाते और घंटी बजाते हुए आना।

   ii.
   - वर्षा ऋतु के पश्चात् शरद ऋतु के खुशनुमा आगमन पर प्रकृति में परिवर्तन होते हैं जैसे मौसम साफ होने के कारण बच्चों के खेलकूद कर अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति करते हैं।
   - चारों ओर मनभावनी चमकीली कोमल धूप बिखरी रहती है।

OR

i. आकाश में बगुले पंक्तिबद्ध होकर उड़ रहे हैं। कजरारे बादलों से भरे आकाश में बगुलों को देखकर लगता है, जैसे संध्या की श्वेत काया तैर रही हो। यह अदभुत सौंदर्य कवि को मुग्ध कर देता है। संध्या का तैरना एक भ्रम है। इसी को कवि ने 'माया' की संज्ञा दी है। माया व्यक्ति को भ्रम में डालती है तथा मुग्ध कर देती है। यह प्राकृतिक दृश्य भी किसी माया से कम नहीं है यह भी कवि को अपने आकर्षण के जादू से बाँध रही है।

ii. इन पंक्तियों में मानवीकरण और पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार का प्रयोग किया गया है। छोटे-छोटे शब्दों के प्रयोग से भाषा में एक नया सौंदर्य आ गया है। साँझ को 'कायावान' अर्थात् 'सतेज श्वेत काया' बताकर कवि ने मानवीकरण अलंकार का भी प्रयोग किया है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. **भाषा को सहूलियत** से बरतने का आशय है- सीधी, सरल एवं सटीक भाषा के प्रयोग से है। भाव के अनुसार उपयुक्त भाषा का प्रयोग करने वाले लोग ही बात के धनी माने जाते हैं। आडंबर रहित, सरलता और बिना किसी लाग -लपेट के कही गयी बात श्रोताओं एवं पाठकों दोनों को प्रभावित करने में सफल होती है।

b. कवि ने नए-नए उपमानों के द्वारा सूर्योदय का सुंदर वर्णन किया है। ये उपमान सूर्य के उदय होने में सहायक हैं। कवि ने इनका प्रयोग गतिशीलता के लिए किया है। सूर्योदय होते ही यह जादू टूट जाता है।

c. कवि दीपावली के त्योहार के बारे में बताते हुए कहता है कि इस अवसर पर घर में पुताई की जाती है तथा उन्हें सजाया जाता है। घरों में मिठाई के नाम पर चीनी के बने चमकदार खिलौने आते हैं। रोशनी भी की जाती है। बच्चे के छोटे-से घर में दिए के जलाने से माँ के मुखड़े की चमक में नयी आभा आ जाती है।
रक्षाबंधन का त्योहार सावन के महीने में आता है। इस त्योहार पर आकाश में हल्की घटाएँ छाई होती हैं। राखी के लच्छे भी बिजली की तरह चमकते हुए प्रतीत होते हैं।

10. i. किसान जमीन की निराई, गुड़ाई करके मिट्टी तोड़कर हल चलाकर खेत तैयार करता है और फिर बीज-खाद डालकर , सिंचाई करता है तब जाकर फसल तैयार होती है।

ii. ऋषि मुनियों ने बताया है पहले स्वयं देना होगा तभी देवता उसे कई गुना करके लौटाएँगे।

iii. इस कथन का अर्थ है कि प्रजा में इतनी शक्ति होती है कि वह अपने अनुसार राजा को चलने के लिए बाध्य कर सकती है।

OR

i. प्रस्तुत गद्यांश 'शिरीष के फूल' पाठ से लिया गया है तथा इसके लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं।

ii. कालिदास के अनुसार, शिरीष के पुष्प केवल भौंरों के पदों के कोमल दबाव को ही सहन कर सकते हैं, पक्षियों के पदों का नहीं। ऐसा कवि का अनुमान है कि इस बात का प्रचार कालिदास ने ही किया होगा।

iii. कालिदास उच्च कोटि के कवियों में से एक हैं। लेखक कहता है कि इतने बड़े कवि की बात का विरोध करने की

हिम्मत नहीं है और उसकी ऐसी इच्छा भी नहीं है।

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

    a. हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं क्योंकि आज हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र, पढ़ाई, आवास, राजनीति, धार्मिक स्थल आदि सभी में लिंग,जाति,धर्म के आधार पर होने वाले विभिन्न भेदभाव देखते हैं किन्तु बाजार इस विचारधारा से अलग होता है।
    बाज़ार को किसी लिंग, धर्म या जाति से कोई लेना-देना नहीं होता है,वह हरएक के लिए खुला होता है। उसके लिए तो हर कोई केवल और केवल ग्राहक है जहाँ लोग आकर अपनी आवश्कताएँ पूरी करते हैं। इस प्रकार यदि हम देखें तो बाज़ार एक प्रकार की सामाजिक समता की रचना करता है।

    b. **नमक** कहानी में 'नमक' भारत और पाकिस्तान के विभाजन के बाद इन अलग-अलग देशों में रह रहे लोगों परस्पर प्यार का प्रतीक है जो विस्थापित और पुनर्वासित होकर भी एक-दूसरे के दिलों से जुड़े हैं। इस कहानी में 'वतन' शब्द का भाव एक-दूसरे को याद करके अतीत की मधुर यादों में खो देने का भाव उत्पन्न करके दोनों तरफ के लोगों को भावुक कर देता है। दोनों देशों के राजनीतिक संबंध अच्छे-बुरे जैसे भी हों, इससे उनका कुछ लेना-देना नहीं होता है, आत्मीयता का भाव ही सर्वोपरि होता है।

    c. भक्तिन की बेटी के सन्दर्भ में पंचायत द्वारा किया गया न्याय, तर्कहीन और अंधे कानून पर आधारित है। भक्तिन के जेठ के बेटे ने संपत्ति के लालच में षडयंत्र कर उसकी विधवा लड़की को धोखे से जाल में फँसाया। पंचायत ने निर्दोष लड़की की कोई बात नहीं सुनी और एक तरफ़ा फैसला देकर उसका विवाह जबरदस्ती उसके निकम्मे तीतरबाज साले से कर दिया इसी वजह से भक्तिन को भी घर छोड़ना पड़ा।
    विवाह के इस संदर्भ में स्त्री के अधिकारों को कुचलने की परंपरा हमारे देश में सदियों से चली आ रही है। आज भी हमारे समाज में स्त्रियों के विवाह का निर्णय उसके परिवार वालों द्वारा लिया जाता है। उसे बेजान वस्तु की तरह अनजान हाथों में सौंप दिया जाता है यदि कोई लड़की विरोध करने का साहस करती भी है तो उसके स्वर को दबा दिया जाता है या उसे दुश्चरित्र घोषित कर दिया जाता है।

    d. चार्ली ने अपने जीवन में कई फ़िल्मों में काम किया। उन्होंने फ़िल्म जगत में बहुत योगदान दिया। चार्ली चैप्लिन ने मेकिंग ए लिविंग, मेट्रोपोलिस, दी कैबिनेट ऑफ डॉक्टर कैलिगारी, द रोवंथ सील, लास्ट इयर इन मारिएनवाड, द सैक्रिफाइस, दि टैम्प आदि फ़िल्मों में काम किया।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

    a. यशोधर बाबू रेम्जे स्कूल की उस आदत को आज भी नहीं छोड़ पाए थे जब जवाब देने वाला अपना एक हाथ आगे बढ़ाता था और सुनने वाला उस पर बतौर दाद अपना हाथ मारता था। इस पर दोनों हँस पड़ते थे। यह आदत आपसी मेलजोल और समरसता बढ़ाने वाली है। बात का व्यंग्य या कटुता इस हँसी में दबकर रह जाती है।

    b. बाल-जती किशनदा का बुढ़ापा सुखी नहीं रहा। उनके तमाम साथियों ने हौजखास, ग्रीनपार्क, कैलाश कहीं-न-कहीं

ज़मीन ली, मकान बनवाया, लेकिन उन्होंने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। रिटायर होने के छह महीने बाद जब उन्हें क्वार्टर खाली करना पड़ा तब उनके द्वारा उपकृत लोगों में से एक ने भी उन्हें अपने यहाँ रखने की पेशकश नहीं की। स्वयं यशोधर बाबू उनके सामने ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं रख पाए क्योंकि उस समय तक उनकी शादी हो चुकी थी और उनके दो कमरों के क्वार्टर में तीन परिवार रहा करते थे। किशनदा कुछ साल राजेंद्र नगर में किराए का क्वार्टर लेकर रहे और फिर अपने गाँव लौट गए जहाँ साल भर बाद उनकी मृत्यु हो गई। बुढ़ापे में उनकी देखभाल के लिए नहीं कोई नहीं था। विचित्र बात यह है कि उन्हें कोई भी बीमारी नहीं हुई। बस रिटायर होने के बाद मुरझाते-सूखते ही चले गए। अकेलेपन ने उनके अंदर की जीवनशक्ति को समाप्त कर दिया था।

c. 'जूझ' कहानी में ग्रामीण जीवन का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। गाँव में किसान, जमींदार आदि कई वर्ग हैं। लेखक स्वयं कृषिकार्य करता है। उसके पिता बाजार में गुड़ के ऊँचे भाव पाने के लिए गन्ने की पेराई जल्दी करा देते हैं। गाँव में पूरा परिवार कृषि कार्य में लगा रहता है, चाहे बच्चे हों, महिलाएँ हों या वृद्ध। कुछ बड़े जमींदार भी होते हैं जिनका गाँव पर काफी प्रभाव होता है। गाँव में कृषक बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर कम ध्यान देते हैं जबकि अपनी अय्याशी के चक्कर में बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करते हैं। ग्रामीण स्कूलों में बच्चों के पास कपड़े भी पर्याप्त नहीं होते। बच्चों को घर व स्कूल का काम करना पड़ता था जैसे- ढोर चराना, खेतों में पानी लगाना आदि।

d. सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सिंधु सभ्यता के सामाजिक वातावरण को बहुत अनुशासित होने का अनुमान लगाया गया है। वहाँ का अनुशासन ताकत के बल पर नहीं था बल्कि आपसी समझ से अनुशासित सभ्यता थी। नगर योजना, वास्तुशिल्प, मुहर, पानी या साफ़-सफ़ाई जैसी सामाजिक व्यवस्था में एकरूपता से यह अनुशासन प्रकट होता है। सिंधु सभ्यता में सुनियोजित नगर थे, पानी की निकासी की व्यवस्था अच्छी थी। सड़कें लंबी व चौड़ी थी, कृषि भी की जाती थी, यातायात के साधन के रूप मे बैलगाड़ी भी थी। हर नगर में मुद्रा, अनाज भंडार, स्नानगृह आदि थे तथा पक्की ईंटों का प्रयोग होता था। सिंधु सभ्यता संपन्न सभ्यता थी किन्तु इसमें प्रदर्शन या दिखावे की प्रवृत्ति नहीं थी। यही विशेषता इसको अलग सांस्कृतिक धरातल पर खड़ा करती है। यह धरातल संसार की दूसरी सभी सभ्यताओं से पृथक है।

e. यह कहा जा सकता है कि खुदाई में प्राप्त धातु और पत्थर की मूर्तियों, मृद्-भांड, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुंदर मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश- विन्यास और आभूषण आदि उस समय के लोगों के सौंदर्य-बोध के परिचायक हैं। इस सबसे कहीं ज़्यादा सौंदर्य-बोध कराती हैं वहाँ की सुघड़ लिपि। यदि गहराई से सोचें तो वहाँ की प्रत्येक सुघड़ योजना भी तो सौंदर्य-बोध का ही एक प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। ढकी हुई पक्की नालियाँ बनाने के पीछे गंदगी से बचाव का जो उद्देश्य था वह भी तो मूल रूप से स्वच्छता और सौंदर्य का ही बोध कराता है। आवास की सुंदर व्यवस्था हो या अन्न भंडारण, सभी के पीछे अप्रत्यक्ष रूप से सौंदर्य-बोध काम कर रहा है। अतः यह कहा जा सकता है कि सिंधु-सभ्यता में नगर नियोजन से ज्यादा सौंदर्य बोध के दर्शन होते हैं।